आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 09-10-14

इस ईश्वरीय ज्ञान के आधार से बाप को पहचान कर बाप को जानने वाले, फिर ज्ञान को स्वयं में धारण कर ईश्वरीय गुणों और शक्तिओं का अनुभव कर बाप को मानने वाले, और बाबा के यज्ञ की सेवा में अपना तन-मन-धन लगाकर बाप को अपना बनाने वाले हम भाग्यशाली बच्चों को ज्ञान-सागर बाप ने कहा, "मीठे बच्चों - सभी मनुष्य आत्माओं के शरीर का नाम हैं. बाकी एक ही परम आत्मा है, जिसको अपना शरीर नहीं है. उस परम आत्मा का नाम है शिव. तुम्हें सब को शिवबाबा का परिचय देना हैं."

हम ब्रह्माकुमार-कुमारीओं का मुख्य कार्य ही है बाप का परिचय सब को देना. बाबा ने आज की मुरली में अलग-अलग पॉइन्टस दी है जो हमें औरो को बाप का सहज परिचय देने में मदद कर सकते है तो वही पॉइन्टस को रिपिट करेंगे.

- हम सब मनुष्य आत्माओं के शरीर का नाम होता है. बाकी एक ही परम आत्मा है जिसको अपना शरीर नहीं है. उस परम आत्मा का नाम है शिव.

- शिव ही रचयिता है तो वही इस सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा राज (razz) हमें समझा रहे है.

- परमात्मा शिव ही अपने आने का समय भी हमें बताते है जब कि नई सृष्टि की स्थापना और पुरानी का विनाश होना होता हैं.

- परमपिता-परमात्मा शिव द्वारा ही नई दुनिया में एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना भी होती हैं.

- परमपिता-परमात्मा शिव ही एक बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर आते है, नई सतयुगी दुनिया की स्थापना और इस पुरानी दुनिया का विनाश करने.

- शिव-भगवान उवाच, कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता है. बाप कहते है, बाप के बिगर तो बाप का सही परिचय कोई दे न सके क्योंकि बाप को तो कोई जानते ही नहीं.

- शिव को परमात्मा और हम आत्माओं को सालिग्राम कहा जाता है.

- जैसे हमारे शरीर में हम आत्माये है लेकिन उसे कोई देख नहीं सकता है. वैसे शिव बाबा को भी कोई देख नहीं सकता है, उन्हें तो बुद्धि से जाना जाता हैं.

- शिव बाप भी हमारी तरह आत्मा बिंदी है लेकिन वह ज्ञान का सागर है. वही हमें सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते है. अन्य कोई भी देहधारी आत्मा को ज्ञान सागर नहीं कहा जाता.

- कितने भी वेद-शास्त्रों पढ़े लेकिन उसमें आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र का ज्ञान नहीं है. वह ज्ञान तो स्वयं परमात्मा शिव आकर ही हम मनुष्यों को देते हैं.

- हम सब आत्माये है ब्रदर्स (brothers). एक मनुष्य आत्मा दूसरी मनुष्य आत्मा को कभी भी सद्गति नहीं दे सकता हैं. सारे विश्व की सर्व आत्माओं की सद्गति करने वाला तो है एक बाप, जिसे ही परमपिता-परमात्मा शिव कहा जाता हैं.

- पतित-पावन यानी पतित आत्माओं को पावन बनाने वाला तो एक ही निराकार बाप है. कोई भी देहधारी पतित-पावन हो न सके. शिव को ही पतित-पावन परमात्मा कहा जाता है.

- परमात्मा शिव सर्वव्यापी नहीं हैं. माया सर्वव्यापी है इसलिए ही सारे विश्व के कोने-कोने में दुख और दुराचार फैला हुआ है क्योंकि अभी सब आत्माओं में पांच विकारों रुपी भूत हैं.

- सर्व आत्माओं में वह है सबसे ऊंचे ते ऊंच आत्मा. उन्हें ही परमपिता-परमात्मा शिव कहते हैं.

ऐसे विचार-सागर-मंथन कर, पॉइन्टस निकालकर, हमारी बुद्धि में रखने से किसी को भी समझाने में हमें मदद मिलेगी.

ॐ शांति.